मध्यकालीन गुजराती कथासाहित्याभ्यास–सन्दर्भे

हेमचन्द्राचार्य–कृत

'काव्यानुशासनम्'

हसु याज्ञिक

मध्यकालीन गुजराती साहित्यना कोई पण कथाश्रयी प्रकार ने तेनां स्वरूपोना उद्‌भव–विकासने, विशेषतः तो दशमी सदीना एना प्रवर्तनने वस्तुलक्षी दृष्टिए जाणवानो एकमात्र दृष्टिपूर्ण लिखित दस्तावेजीरूप मूळ सन्दर्भग्रन्थ हेमचन्द्राचार्यकृत 'काव्यानुशासनम्' छे. संस्कृत मीमांसानो आ ग्रन्थ छे, एम धारीने मध्यकालीन गुजरातीना लिखित प्रवाहनां रास, आख्यान, पद्यवार्ता, फागु, बारमासी, प्रबन्ध–पवाडा तथा कण्ठप्रवाहनां लोक–महाकाव्य, अर्धसाहित्यिक महाकाव्य – SemiLiteratury Epicना मूळ, विकास, महत्त्वनां लक्षणो वगेरेनो अभ्यास करवामां, प्रस्तुत सन्दर्भग्रन्थनी आंख उघाडनारां तथ्यो प्रगट करती बाबतो तरफ मध्यकालीन गुजराती साहित्यना अभ्यासीओनुं बहु ज ओछुं ध्यान गयुं. एनुं परिणाम ए आव्युं के आख्यानने छेक चौदमा–पंदरमा शतकमां जन्मेलुं गुजरातीनुं ज आगवुं नवुं स्वरूप मानवामां आव्युं, अने आख्याननो पिता भालण छे, एवुं ज स्थापीने चालवामां आव्युं. ख्यात एवी पौराणिक कथाने देशी गेय ढाळमां रजू करवानी पद्धति तो बार–तेर सदीना **रास**मां सुनिश्चित थई गई हती अने **कडवक**नुं माळखुं पण प्रचारमां आवी गयुं हतुं तथा प्रबन्धमध्ये परबोधनार्थ आवती नलादिनी कथाने एक कृतिना रूपमां बांधीने गान, पठन अने स्वल्प अभिनयना आधारे एक ग्रन्थिक द्वारा सर्जाती–रजू थती कृति ते 'आख्यान' एम अपभ्रंशकाळे ज संसिद्ध थई चूक्युं हतुं. आख्यानना स्वरूप–घडतरना विकासमां भालणनुं अर्पण अमूल्य छे, ए विशे कोई प्रश्न नथी ज, परन्तु 'आख्यान' अपभ्रंशनो ज सीधो वारसो धरावतुं स्वरूप, ते आ काळे ज जन्म्युं ने संसिद्ध थयुं, एम धारी लईने चालवुं, ते तथ्यनुं अज्ञान गणाय. मध्यकाळनां रास, फागु, 'प्रबन्ध' जातिप्रकार Literary Gnre ऐतिहासिक घटनामूलक घटकअंगो, अन्तरअङ्ग विषयवस्तु–बहिर्अङ्ग निरूपण–माळखुं के एनुं निर्वहण, एनी रजूआतनुं स्वरूप, हस्तप्रतरूपे मळतो

मूळ आधाररूप कृतिपाठ अने तेनी रजूआत – Performance माटेना पाठ (text) वच्चेनो केटलोक भेद : आ सन्दर्भे हजु आजे पण अभ्यासीओमां ज कोइ स्पष्टता नथी. कण्ठप्रवाहनां लोकमहाकाव्योनी सुदीर्घ परम्परा अपभ्रंशोत्तरकाळनी मध्य, उत्तर, पश्चिमक्षेत्रनी विविध नवी नवी जन्मेली आर्यभाषाओमां हती, जे 'आल्हा', 'ढोलागान', 'बगडावत–कथा' (अेनुं भीलीरूप गुजरांनो अरेलो), 'पाबूजीकथा' (अेनुं भीलरूप राठोरवारता), रामकथा–कृष्णकथा–पाण्डवकथा–नाथकथा वगेरेना अनेक स्थानिक जाति–बोलीगत रूपान्तरो दशमी सदीथी चौदमी सदी सुधीना ४०० वर्षना सुदीर्घ गाळामां प्रवर्तता हता ने जेनां नहोतां तो लिखित प्रवाहमां कृतिरूप बंधायां के नहोतां तो लिखित प्रवाहमां महाकाव्य दाखल कोइ वृत्तिनी रचनानां उद्यम–साहस ! आथी, नवी जन्मेली आर्य भाषाओ New Indo-Aryan Languages मां लोककाव्य हतां ज नहीं, आवुं ज धारी–मानी–स्वीकारी लेवामां आव्युं. आनुं मूळ कारण अे के, आ बधुं ज स्पष्ट रूपमां जाणवानी लिखित दस्तावेजी सामग्रीने, अे संस्कृतमां ज मीमांसानां रूपमां लखायेली होवाने कारणे, अे बधी ज परम्पराओ संस्कृत भाषानी मानी लेवामां आवी. संस्कृतना अभ्यासीओए जे अभ्यास कर्या ते सहज छे के संस्कृतनी ज परम्पराने जाणता होय, मध्यकालीन लिखित परम्परा के लोकसाहित्य तरीके वर्गीकृत थई गयेली कण्ठपरम्पराने जाणता न होय. मल्टी डायमेन्शनल, मल्टी डिसिप्लिनरी अेप्रोच ने कम्पेरेटिव स्टडीनुं महत्त्व प्रमाण्या पछी पण, आपणा अभ्यासमां केन्द्रमां तो मात्र सम्बन्धित लिखित ने प्रशिष्ट मनातुं साहित्य ज रह्युं ! अे पण एकांगी– 'साहित्य' अेटले शब्दाश्रयी कला. अे कलाने आपणा पूर्वना मीमांसकोअे क्यारेय आवी मर्यादित मानी नथी, अेना दृश्य–श्रव्यरूपने, रजुआतना माध्यमने पण दृष्टिमां राख्यां छे अने 'साहित्य' कलाना शब्दाश्रयना अंगने मूळ ने मुख्य मानवा छतां, अेनी कृतिनी रजुआतमां संगीत, नाटक, नृत्यनो संयोजित विनियोग थाय छे, ते दृष्टिमां राखे छे. 'संगीत' अे पर्याय ज 'म्युझिक' (to muse, आनन्द आपवो) नी अपेक्षाअे विशेष सूक्ष्म ने सूचक छे. न केवळ स्वर, न अेना संयोजननुं स्वरूप, परंतु 'नृत्येन, गीतेन, वाद्येन सहितम्' अे आ पर्यायने बांधे छे. नाटकमां, रसतत्त्व, अेनुं मनोवैज्ञानिक पासुं, 'औचित्य' अेना व्यवहार सामग्रीना विनियोग, उपयुक्तताने, 'गुण' अेना समग्र समन्वित

कलाना रूपने, 'दोष' एनां भयस्थानने-क्यां जवुं, क्यां न जवुं, thus far and no further ना सीमाडाने. Line of demarkation -चोक्कस रीते ने रूपे बांधे छे. कलास्वरूपनी समग्रता - totality, बहुआयामी - Multidimentional - स्वरूपने दृष्टिमां राखीने चाले छे. आम, पूर्वनी कलामीमांसा विकसित ने पूर्ण रही छे.

भरतादि पछी समयान्तरे विविध ग्रन्थो रचाया एमां सर्जनमूळ, कृतिनां घटकअंगो अने भावन-मूल्यांकननी प्रक्रिया, एनुं स्पष्ट रूप प्राचीन ग्रीक अने भारतीय आर्य परम्परामां बंधायां. विविध काळना ग्रन्थोमां कलानो, एनी विकसती विभावनाना बन्धाता-विकसता जता रूपमां आलेख मूर्त थयो छे. ज्यां केटलुंक नवुं के विशेषित आव्युं एने आपणे नवोन्मेष के दृष्टिपूर्ण अभिनव सिद्धान्त प्रस्तुतीकरण-स्थापन तरीके स्वीकार्युं अने जे मीमांसकोए सूत्रात्मक रूपमां पूर्व संचित सिद्धान्तनुं निरूपण कर्युं तेमनो 'समन्वय-कार'मां समावेश कर्यो. आ दृष्टिए मम्मट अने हेमचन्द्रने समन्वयकार तरीके विशेषतः ओळख्या-ओळखाव्या. पूर्वसंचितनुं नवनीत सूत्रबद्ध करवुं, ए समन्वयकारनुं मुख्य कार्य मनातुं आव्युं छे, त्यारे विशेष ध्यान ए बाबत पर खेंचावुं जोईए, के आ वर्गना मीमांसको अने तेमना ग्रन्थो मात्र सारसंक्षेप के दोहन नथी ज. एमां एमनी पोतीकी दृष्टि, सूझ ने केटलीक आगळ जोवा न मळती होय तेवी स्थापना पण होय छे. कथानुं दृष्टान्त आपीने स्पष्टता करीए तो 'हंसावती'नी कथाना असाइतथी आरम्भीने ते शिवदास सुधी ने तेथी पण आगळ जे कथाकृतिओ रचाइ, हंस-वत्स पर जैन स्रोतमां अनेक रासरूप रचनाओ थइ के पछी माधवानल, मारुढोला, सदेवंत-सावलिंगा, नळकथा, सगाळशाकथा ने बीजी एवी अनेक कथाओ पर समय-समये जे अनेक कृतिओ रचाई तेमां अनेकनी एक कथा, एना ए ज स्वरूपमां नथी आवी. भाषा अने सामाजिक परिस्थितिमां जे परिवर्तनो आव्यां, एटलां ज नवी कृतिमां छे एवुं नथी. आ उपरान्त पण ए कथाओ पाछळ रहेला रचनाहेतु, समकालीन कण्ठपरम्परानां उमेरण-संवर्धन-रूपान्तर अने खास तो एना निरूपकनुं दृष्टिबिन्दु, प्रचलित एवी कथामांथी पण नवी ज एवी कृतिरूप रचना करे छे. एने कर्तानी सर्जकता, कल्पकता, दृष्टिबिन्दु - point of view ने केटलुंक नवुं ज अर्थदर्शन

जूनी कृतिने नवुं ज सर्जक रूप आपे छे. प्रत्येक रचना आ दृष्टिअे मात्र Old wine in new bottle नथी, 'वाइन'ने 'विन्टाझ' (आथो) पण जुदां होय छे. आवुं ज मीमांसानां सूत्रात्मक अने समन्वित मनातां रूपमां छे. बधुं साररूपे सूत्रबद्ध करवामां मम्मटाचार्यनी पोतानी आगवी दृष्टि छे, हेमचन्द्राचार्यनी पण अेम आगवी दृष्टि छे. समन्वयकार मात्र सारदोहन, संक्षेप आपतो नथी; पोतानां ज्ञानपरिशीलन, स्वाध्याये अेने जे केटलुंक नवुं लाध्युं छे, ते अेना केन्द्रमां छे. हेतु मात्र जे चर्वित छे तेने सूत्रबद्ध करवानो ज नथी, जे केटलुंक स्वीकार्य छे, जे केटलुंक अस्वीकार्य छे ने केटलुंक अेकदम नवुं ने जूदुं छे, ते अेना केन्द्रमां छे. दृष्टान्तथी कहीअे तो काव्य-प्रयोजनमां मम्मटने **यशसे, अर्थकृते, व्यवहारविदे, शिवेतरक्षये** दृष्टिमां आवे छे, 'आनन्द' उपरान्त, ज्यारे हेमचन्द्राचार्यने '**अर्थकृते, व्यवहारविदे, शिवेतरक्षये**' स्वीकार्य नथी. अेमना मते काव्यनां आनन्द, यश अने प्रीतिपूर्ण उपदेश मुख्य छे. आ तो स्पष्टता माटेनुं अेकमात्र दृष्टान्त छे. आ रीते ज रस, भाव, दोष, गुण, अलङ्कारमां पण मीमांसक तरीकेनी अेक पोतीकी मुद्रा छे. अने विशेष छे ते जे जे साहित्य-प्रकारो, जातिओ, स्वरूपो वगेरेमां भरत, कुन्तक, अभिनवगुप्त, आनन्दवर्धन, मम्मट, महिम भट्ट, धनञ्जय द्वारा जे कंइ कहेवायुं-चर्चायुं अेनुं पश्चिम भारतना मारु-गुर्जर क्षेत्रमां दशमी सदीमां जे रजूआतमां प्रतीत थतुं विशेष रूप छे, तेनुं ज केटलुंक नवुं जे अन्यनी मीमांसामां नथी ते छे. अे तो जाणीतुं ज छे के माळवाना गुजरात माटेना हीनभाव-वचनमांथी जन्मेलो 'तोलाङ्गुलो, वधूमुख-विक्षमाणो, भ्रष्टमुखो' होवानो गुजरात-गुजरातीता पर तिरस्कारनो भाव छे तेनो ज जवाब हेमचन्द्राचार्यनी अनुशासन-त्रयी छे. आम छतां केवळ विद्याने ज वरेला आ शीलवान मीमांसके भोज वगेरेनो छोछ नथी राख्यो. अेमनां पण उद्धरणो अेमणे चर्च्यां छे.

'काव्यानुशासनम्' अने स्वोपज्ञटीका 'विवेक' हेमचन्द्राचार्यना मुख्य मीमांसाग्रन्थो छे. 'काव्यानुशासनम्'ना कुल ८ अध्यायमां, २०८ सूत्रोमां १. काव्यलक्षण, २. रस, ३. दोष, ४. गुण, ५. अलङ्कार (शब्द), ६. अर्थालङ्कार, ७. नाट्य अने ८. प्रबन्धात्मक काव्यभेदनी स्थापना-चर्चा तेओअे करी. अे पछी विशेष चर्चा १. अलङ्कारचूडामणि अने २. काव्यानुशासन परनी 'विवेक' नामनी टीकामां करी. अहीं कथासन्दर्भे, खास करीने मध्यकालीन लिखित

परम्परानी गुजराती कथाओ अने कण्ठपरम्परानी लोककथाना अभ्यासनी दृष्टिअे महत्त्वनो अध्याय - ८ छे, तेथी, तेनी विगत क्यां-केटलो-केवो प्रकाश पाडे छे ते उत्तरार्धमां जोइअे. विशेष सूझ ने दृष्टिपूर्ण, केटलीक दृष्टिअे तो अभूतपूर्व अेवुं 'प्रबन्ध-काव्य'नुं वर्गीकरण छे. अेने आलेखना रूपमां आरम्भे जोइअे :

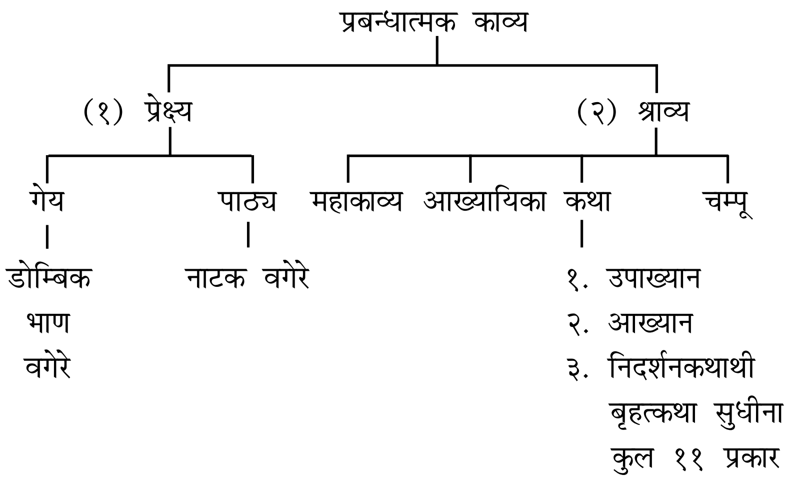

अहीं कथाविषयक समग्रदर्शी विभावना अने वर्गीकरणनी दृष्टिअे लगभग छेवटनुं अने सर्वने स्वीकार्य बने अेवुं सूत्रबद्ध अेवुं कार्य हेमचन्द्राचार्य द्वारा सिद्ध थयुं छे. कथाना प्रकारोनी चर्चा अग्निपुराण, अमरकोश, अलङ्कार-सङ्ग्रह, काव्यालङ्कार वगेरेमां मळे छे. भामह, विश्वनाथ, आनन्दवर्धन, दण्डी वगेरेअे पायानी चर्चा पण करी छे, परन्तु तेमां क्यांय हेमचन्द्राचार्यना वर्गीकरणमां छे तेवुं, युरोपीय-ईरानी-भारतीय अे त्रणे आर्यपरम्परानी प्राचीन-कथाओनुं, अेना प्रकार अने वस्तुगत भेद तथा रजूआत जेवां बधां ज मुख्य अङ्गो हस्तामलकवत् बनतां नथी. कथा अने आख्यायिकाना स्थूल भेदमां ज क्यांक चर्चा अटवाई जती होय अेवुं पण लागे छे. अहीं 'प्रबन्धात्मक काव्य'अे जातिसंज्ञा ज, कथाना गेय, अभिनेय अने नृत्य अेवा त्रणेने उचित वर्गमां स्थापे छे.

अहीं अध्याय-८ना आरम्भे ज काव्यने 'प्रेक्ष्य' अने 'श्राव्य' अेम बे

प्रकारोमां वहेंचे छे. अहीं 'प्रबन्ध'नो अर्थ 'जे कृतिमां कोई अेक मुख्य कथा आदि, मध्य अने अन्तथी, गद्यमां वा पद्यमां, क्वचित उभयमां पण आलेखवामां आवी छे ते ? अेम अध्याहृत छे, परन्तु पायामां छे. आ दृष्टिअे रास, आख्यान, पद्यवार्ता-कथानो पण ज्यां आश्रय छे तेवा ऋतुकाव्यो (फागु-बारमासी) वगेरेनो पण समावेश थाय छे. गणपति कायस्थे माधव अने कामकन्दलानी प्रेमकथा २,५०० दुहाओमां लखी तेने, आ अर्थमां ज 'माधवानल-कामकन्दला-दोग्धकप्रबन्ध' अेवा कृतिनामे ओळखावी. पूर्वेना अने पछीना जैनस्रोतना रचयिताओअे गेय, ढाळनी देशीओमां जे जे कथाओनां आदि-मध्य-अन्त बांध्यां तेने 'रास' संज्ञा आपी, पौराणिक कथाओनां पूर्ण ने स्वतन्त्र कथानको भालण-नाकर-प्रेमानन्द वगेरेअे गेयढाळमां बांधीने आप्यां तेने 'आख्यान' संज्ञा आपी, जे अपभ्रंशकाळे पण अस्तित्व धरावती हती. जेमणे मुख्यत्वे मनोरञ्जक प्रकारनी कथाओ विशेषतः दुहा-चोपाईनो ज उपयोग करीने आपी तेमणे आवी रचनाओने 'अमुकना दुहा' के 'अमुकनी चोपाइ' अेवा नामे ओळखावी. छे तो आ बधां ज रास, आख्यान, पद्यवार्ता 'प्रबन्ध' अेटले के जेमां कोई अेक मुख्य कथा आदि-मध्य-अन्तथी कोई अेक कृतिना रूपमां बांधवामां आवी छे, तेना ज प्रकारो. प्रबन्धना ज आ स्वरूपगत भेद धरावता प्रकारो जुदा पड्या ते तेमां प्रयोजायेला छन्दबन्धने कारणे. जेमां मात्रामेळना ज छन्दोमां केटलाक उमेरण करीने गेय ढाळमां वपराता हता अेवा 'ढाळ' के 'देशी'ओमां जे जे कथाश्रयी प्रबन्धो लखाया, गान साथे रजू थया, तेने जैन स्रोतमां 'रास'नी अने जैनेतर स्रोतमां 'आख्यान'नी रचना तरीके ओळख मळी. रह्यो त्रीजो मोटो वर्ग कथाओनो, जे दुहा-चोपाइना सळंगबन्धमां रजू थती हती ने अेना कर्ताओअे पोते तो 'दुहा' के 'चोपाइ' अेवी संज्ञा आपेली, छेक शामळ सुधी पण केटलाके 'अमुकनुं आख्यान' अेम पण कह्युं, तेने आधुनिक अभ्यासीओअे 'पद्यवार्ता' अेवी स्वरूप-संज्ञाअे ओळखावी. आम करवामां 'पद्यवार्ता'ने 'रास' अने 'आख्यान'थी जुदा पाडती ओळख-संज्ञाने, 'स्वरूप' Literary Form तरीके लईअे, स्वीकारीअे तो अेमां कशुं खोटुं के अयथार्थ नथी, केमके, पद्यवार्ताने पण 'रास' अने 'आख्यान'थी जुदां पाडतां केटलांक लक्षणो तो परम्परामां सिद्ध थयां ज छे. परन्तु, अहीं, मध्यकाळना अभ्यासीओअे, लक्षमां राखवानी जरूर अे हती के आ त्रणे स्वरूपो छे तो 'प्रबन्धकाव्य'ना भिन्न

भिन्न प्रकारो अने वर्गो. 'प्रबन्ध' आम, हेमचन्द्राचार्ये जे रीते मूकी आप्युं छे अे रीते तो अेक मुख्य वर्ग छे, जाति-प्रकार छे.

आ ध्यानमां न रह्युं ने कान्हडदे-प्रबन्ध पर ज ध्यान रह्युं अने अपभ्रंशकाळमां तथा पछी कुमारपाळ वगेरे अैतिहासिक पात्रोविषयक कथाश्रयी रचनाओ 'प्रबन्ध' नामे/शीर्षके ओळखाई तेथी जे कथानां पात्र अने घटनाओ ऐतिहासिक मनातां होय अेमनी कथाओने जुदी पाडवा 'प्रबन्ध'ने पण रास, आख्यान, पद्यवार्ता जेवुं भिन्न ने स्वतन्त्र स्वरूप मानीने चालवामां आव्युं, चलावी लेवामां आव्युं. अे भिन्न स्वरूप जरूर छे. रास अने आख्यानथी अैतिहासिक मनातां पात्र-घटनानो आधार लेती कथाओ जुदी पडे ज. परन्तु अेने माटे 'प्रबन्ध' जेवो जाति माटेनो निश्चित थयेलो पर्याय अपनावतां सेळभेळ थाय. वळी, 'रणमल-छन्द' ने अेवी आ कुळनी बीजी 'पवाडा'नी रचनाओनुं शुं ? अे पण प्रबन्ध ? 'पवाडा'ना मूळमां 'प्रवाद' छे, 'प्रबन्ध' नहीं. पवाडा दक्षिणमांथी, महाराष्ट्रमांथी आवेल प्रकार अने संज्ञा छे. महाराष्ट्री अपभ्रंश साथे अेनो सीधो अनुबन्ध छे. मराठा/आक्रमणो अने शासनना गाळामां, दक्षिण गुजरातमां आदिवासी बनीने वसी गयेली महाराष्ट्री-खानदेशनी बोली बोलनार द्वारा तथा मराठीमां कोई विजेताने बिरदावता 'जीतगेला' टुक धरावती रचनाओ 'पवाडा' तरीके गवाती होवाने कारणे गुजरातमां पण आ पर्याय प्रयोजातो थयो. दक्षिण गुजरातनी आदिवासी परम्परामां सीतानो पवाडो छे. सीताजीनो समावेश पौराणिक पात्रमां थाय, अैतिहासिक युगना आरम्भ पहेलाना समयगाळामां, इतिहासमां नहीं. छतां अे रामकथानी कण्ठपरम्परानी आदिवासी रचनामां ज सीतानो पवाडो अेवो प्रयोग थयो छे. जातिना वीरनी बिरदावली गावी, अेनी जीतने गानथी वधाववी अे बृहत् अेवा आर्यकुळनी जातिनो प्रचलित, परम्परागत प्रकार छे, जेनो कुळमूळगत जातिप्रकार रीते सम्बन्ध 'आख्यायिका' साथे छे, 'कथा' साथे नहीं. परन्तु 'प्रबन्ध'मां अे बन्ने छे - प्रबन्धनी जे मूळभूत जाति-प्रकारनी ओळख छे त्यां. जेने छन्द, अष्टक, पवाडो वगेरेथी ओळखावी छे ते रचनाओना ज कुळमां बिरदावली, प्रशस्ति Ballad, Heroic poetry नो समावेश थाय छे अने अेमांथी ज काळक्रमे Folk-epic, Semi-Literary epic अने प्रशिष्ट मनातां Classical epic विकस्यां छे. हेमचन्द्राचार्ये अध्याय ८/५, सूत्र २००मां पहेलो ज समावेश साहजिक क्रमे महाकाव्यनो करी सूत्र २०१

(८/६)मां महाकाव्यनुं लक्षण बांधतां जणाव्युं छे के महाकाव्य मुख्यत्वे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा ग्राम्य भाषामां रचाय छे. अहीं नोंधपात्र छे ते 'ग्राम्यभाषा' अेटले के मारु-गूर्जरमां बोलाती लोकबोली. ई. ८५०मां गुजराती जन्मी चूकेली अने 'कुवलयमाला'मां आ प्रदेशमां वसता लोकोमां अमे, तमे, भलु, बोलातुं लिखित दस्तावेजी रूपमां मळे छे. अेनो अर्थ अे के हेमचन्द्राचार्य अने सिद्धराजनी व्यवहारभाषा तो बोलाती गुजराती ज हती, मारु-गूर्जर हती. अेमां साहित्य पण रचवानी परम्परा न हती अेथी संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंशमां रचायुं. परन्तु हेमचन्द्राचार्य ज्यारे महाकाव्य अंगे सूत्र २०१मां **'पद्यं प्रायः संस्कृतप्राकृतापभ्रंशग्राम्यभाषानिबद्धं'** अेम लखे छे तेनो अर्थ अे के ते समये जे मारु-गूर्जर Old Western Rajastani हती अेमां पण 'वृत्तसर्गाश्वास-सन्ध्यवस्कन्दबन्धं सत्सन्धि शब्दार्थवैचित्र्योपेतं' अेवां महाकाव्यो रचातां हतां. अहीं ज स्पष्ट थशे के आचार्यश्रीअे मात्र लिखित अने प्रशिष्ट मनाती महाकाव्यनी परम्पराने ज दृष्टिमां राखीने सूत्रबद्ध नथी कर्युं, बोलाती बोली वा भाषानी तत्कालीन प्रवाह-परम्पराने पण दृष्टिमां राखी छे. अहीं जेने Folk-epic के बारोटी परम्परानुं Semi-literary epic कहीअे छीअे, Heroic Narrative तरीके उल्लेखीअे छीअे तेनो ज निर्देश ने सूत्र-व्याख्यामां समावेश छे. आचार्यश्रीने अेमना समयनी जीवती लोकपरम्परानो प्रत्यक्ष परिचय अने अेनुं पण साहित्यिक मूल्य स्वीकृत न होत तो अेमणे पण बीजांनी जेम, आवी लोक-परम्पराना साहित्यने मीमांसाग्रन्थमां समाविष्ट कर्युं न होत ! आ कारणे तथा अपभ्रंश-व्याकरण निमित्ते दृष्टान्तमां लोक-कण्ठपरम्पराना दुहाओ मूक्या छे. (आथी ज आ लखनारे अेना गुजरातीमां लखायेला सर्वप्रथम Folkloristics, लोकविद्याविज्ञानमां, लोकविद् folkloristमां हेमचन्द्राचार्यने गुजरातना आदि लोकविद्याविद् तरीके दर्शाव्या छे.) लोकपरम्परानां विविध लोकमहाकाव्यो, जेनो आरम्भमां निर्देश कर्यो छे, तेमां 'सर्ग' माटे 'साक'नो प्रयोग थाय छे. आ शब्द वैदिक-काळनो छे. 'रुद्राष्टाध्यायी'ना त्रीजा अध्यायना पहेला ज मन्त्रमां 'शतम् सेना अजयत् साकम् इन्द्रः' सो सो योद्धाओ धरावती सेना पर विजय प्राप्त करवो ते इन्द्रनुं पराक्रम छे. आने आधारे ज जातिने उगारनार विजेता वीर माटे 'अेके हजारा' प्रयोग आजे पण थाय छे. अने आवा वीरनी 'साक' अेटले के पराक्रमगाथाने 'निहालदे सुलतान' जेवा लोकमहाकाव्यमां

'साका' तरीके ओळखावी छे. सर्ग, लम्बक, लम्भक, साक, तरङ्ग – वगेरे मध्यम कदनी तथा मोटी कथाओना खण्डो के विभाग माटे चर्चाय छे. आम, 'कान्हडदेप्रबन्ध'ने अन्य आधारे वीरगाथा माटे 'प्रबन्ध' के पछी 'पवाडो' वापरीअे छीअे, ते आ दृष्टिअे संशोधनपूर्ण पुख्त चर्चा-विचारणा-निराकरण मागे छे ने तेमां हेमचन्द्राचार्यना आठमा अध्यायने दृष्टिमां राखवो उपयोगी बनशे. नाटक, रूपक वगेरेनी पण चर्चामां अनेक प्रकारो अेवा छे, जेमां ते काळनी गुजरातनी प्रशिष्ट ने लोक बन्ने रङ्गमंचीय कलाओने अेनां मूळ साथे जाणवानी महत्त्वनी सामग्री छे.

अध्याय : ८नुं अेक नवुं, दृष्टिपूर्ण अने संशोधनमां खूब ज अनिवार्य रूपमां उपयोगी कार्य छे ते १. उपाख्यान अने २. आख्यान पछीना कुल नव (९) कथाप्रकारो ३. निदर्शन ४. प्रवल्हिका ५. मन्थल्लिका, ६. मणिकुल्या छे. पछीना ९ सकलकथा १० उपकथा अने ११ बृहत्कथा पण कथानकना कद वगेरेनी दृष्टिअे तथा स्वरूपनी दृष्टिअे महत्त्वनां छे.

'आख्यान' सन्दर्भे सूत्र २०३ अनुषङ्गे लख्युं छे : **'प्रबन्धमध्ये परबोधनार्थं नलाद्युपाख्यानमिवोपाख्यानमभिनयन् पठन् गायन् यदेको ग्रन्थिक : कथयति तद् गोविन्दवदाख्यानम्'.** प्रबन्ध-अेटले के गद्य के पद्यमां बन्धायेली कथानी कृति. अेटले के महाभारत वगेरे. अेमां अन्यने बोध आपवा माटे जे कथा कहेवाती होय तेने कोइ अेक ग्रन्थिक स्वतन्त्र कृतिना रूपमां बांधे अने अभिनय, पठन, गान साथे / माटे ग्रन्थमां बान्धे – आवी कथा ते आख्यान. भालणथी आरंभी प्रेमानन्द सुधीना आख्यानकारोनी रचनाओमां जे छे ते आ सूत्रमां छे. अेनो अर्थ अे छे के दशमी-अगीआरमी सदीमां 'आख्यान' छे. आवी कृतिना पदबन्धमां गेय देशी ढाळ क्यारे वपरातो थयो, अेना कडवकना अंगे कया कया तबक्के विकस्या : आ बाबत विशेष संशोधन मागे छे, परन्तु गुजरातीना जन्मना समये अपभ्रंशमां तेमज आचार्यश्रीनो ज बोली माटेनो पर्याय प्रयोजीने कहीअे तो ग्राम्यभाषामां 'आख्यान' हतुं. अेनो ज विकास पछीना तबक्के थयो.

कथानी आन्तर-सामग्री Content of the tale अने तेनुं कृतिमां बंधाता रूपनी-अेटले के Form-दृष्टिअे निदर्शन, प्रवल्हिका, मन्थल्लिका,

मणिकुल्या अहीं पहेली ज वखत चर्चाया जणाय छे. अगाउ क्यांय आ विशे केटलुंक लखायुं होय ते आ लखनारना ध्यानमां न होय तेवुं बने. परन्तु कथाने, आ रीते एना कथागत रूपने अने एना प्रयोजित रूपने आधारे वर्गीकृत करवानुं कार्य हेमचन्द्राचार्य पहेलां थयुं लागतुं नथी. 'काव्यानुशासनम्' अने 'विवेक'मां केटलांक दृष्टान्तो छे. पछीनी गुजराती कथानी कृतिओमां आ प्रकारनी कथाओ विशेष लखाई छे. कथानुं आ वर्गीकरण, एनुं कथानकजन्य आन्तर-स्वरूप अने कथा-कथाने जोडती भूमिकाकथानी पद्धति : अहीं सूत्रबद्ध बनी छे. मध्यकालीन कथाओ उपरान्त लोककथा Falktale माटे पण आ प्रकारो अभ्यासोपयोगी छे.

नीति के व्यवहारज्ञान माटे ज्यारे पशु, पक्षी के अन्य निम्नपात्रनुं कथावृत्तान्त प्रयोजाय त्यारे एने निदर्शन कहेवाय. एना दृष्टान्तमां **पंचतन्त्र** अने **कुट्टनीमत** दर्शाव्या छे. अहीं Animal Story प्राणीकथा, Fable अने Parable बन्नेनो समावेश छे. 'फेबल'मां नीतिउपदेश माटे जे दृष्टान्तरूप कथा कहेवाय ते Animal Story छे. एमां पात्रस्थाने पशु, पक्षी वगेरे छे. आवी ज नीतिकथारूपे, दृष्टान्तरूप कथामां प्राणीने बदले मानव ज पात्ररूपे होय तो एने 'पेरेबल' कहेवाय. ईसपनी कथाओ 'फेबल' छे, टोल्स्तोये लखेली बोधकथा 'पेरेबल' छे. माणसने जोइ जोइने अन्ते केटली जमीन जोइए, एनी कथा टोल्स्तोय आपे छे. सांजनो सूरज ढळे त्यां सुधीमां जेटली भूमि पर दोडी वळे एटलीनो मालिक : आ माटे लोलुप मोहवश एटलुं दोडे छे के अन्ते सूरज ढळे छे त्यारे ए पण थाकातिरेके ढळी पडे छे ने बे गज जमीन-कबर माटेनी ! स्पष्टत: अहीं बोधकथा छे. नीति के बोध माटे दृष्टान्तरूपे कहेवाती कथा ते निदर्शनकथा, दृष्टान्तकथा.

अहीं कोइने प्रश्न ए थाय के कुटणीए कहेली कथाने आ वर्गनी केम कहेवामां आवी ? नीतिदृष्टिए, मानव छतां पशुवत् होवाने कारणे ? मूळ कृति जाणता न होय तो आवो प्रश्न थाय. 'कुट्टनिमतम्'मां एक युवान वाराङ्गना कुटणीनी पासे आवी कहे छे : 'मारी पासे कोई नवो, युवान, समृद्ध पुरुष एक वखत आवे छे. कोई कायमी मने पाळनारो, पोषनारो, चाहनारो नथी. आवो ग्राहक केम पामवो ?' आ मतलबनी पृच्छानो जवाब आपता

अनुभववृद्ध कुट्टणी, प्रयोजित मनोविज्ञान Applied Psychologyनो उपयोग करीने कहे छे : 'बधा आवे छे अेक वखत नावीन्य माटे ! वाराङ्गनागृहे आवनारने गृह, पत्नी, गाम बधानी उपरवट जई आववुं पडे छे. दरेक वखते कंइ माणस आवां विघ्नोनी उपरवट थइने न आवे !' युवान वाराङ्गना पूछे छे : 'उपाय शो ?' कुट्टणी कहे छे : 'आवनारने, मात्र नावीन्यथी अेकवार साहस करीने आवनारने लागवुं जोइअे के अेने मन-हृदयथी उत्कटतम रूपे चाहनार, प्रेम करनार तो मात्र तुं ज छे. जो अेनी तुं प्रतीति करावी शके तो ज तारो प्रेमी बधा सामेनो कायमी विरोध करीने पण तारी साथे रहे.' आम कही काशीराज अने वाराङ्गनानी कथा कहे छे. प्रेम मात्र करवानी, देखाडवानी वात नथी. सामाने खातरी थाय अेवुं करवानी आवडतनी वात छे. अहीं जोई शकाशे के केन्द्रमां अेक विचार छे, सिद्धान्त छे, एने पुष्ट करवा माटे कहेवाती कथा छे तेथी ते निदर्शन-कथा छे. आम सूत्रबद्ध अेवा वार्ताप्रकारने समजवा माटे, पुष्ट करवा माटे जे कथानुं दृष्टान्त अपायुं होय, ते कथाने पूरा सन्दर्भ साथे जाणता होइअे त्यारे ज मूळ वात पकडाय छे. आम, दृष्टान्तकथा, निदर्शनकथा भारतीय प्राचीन-मध्यकालीन साहित्यनो व्यापक प्रकार छे, जे तेना 'हेतु'नी दृष्टिअे वर्गीकृत छे. कोई वात, वाद, दृष्टान्तने पुष्ट करवा माटे जे कथा प्रयोजाय ते निदर्शन-कथा. आ बराबर दृष्टिमां होय तो ज 'प्रवल्हिका'नुं सूत्र पकडाय. अे विशे कहे छे :

'प्रधानमधिकृत्य यत्र द्वयोर्विवादः'

कोई अेकने राखीने थतो बे वच्चेनो विवाद ते प्रवल्हिका.

अहीं 'प्रधानम् अधिकृत्य'नो अर्थ क्यारेक भूल-थाप खवडावे. अे ज रीते 'विवाद' पण. 'प्रधानम्' अेटले मुख्य ने मध्यस्थी अेवी कोई व्यक्ति नहीं, परन्तु 'प्रधानम्' अेवो कोई विषय, कोई वाद, कोई सिद्धान्त, कोई मान्यता. अने 'विवाद' अेटले मात्र वातचीत के दलील नहीं, परन्तु पोताना मत, विचार, वाद, दलील वगेरेने पुष्ट करतुं निदर्शन. पक्ष ने प्रतिपक्ष बन्ने पोतपोताना मतने पुष्ट करती दृष्टान्तकथा कहे, निदर्शन-कथा कहे. अेक पक्ष अेक कथा कही अेक वात स्थापे ते तोडवा बीजो पक्ष बीजी कथा मांडे, जे अेना पक्षने दृढ करे ने सामेना पक्षनी दलीलनुं खण्डन करे. आम, आ

प्रकार निदर्शन-शृङ्खला-संयोजननो छे. जे कंइ कहेवाय, स्थपाय के रदियो अपाय, तेने निदर्शन द्वारा पुष्ट करवुं पडे.

आना दृष्टान्तरूपे अर्धप्राकृतमां लखायेली चेटक दर्शावी छे. अे कथा प्रकाशमां नथी, परन्तु जैन अने जैनेतर बन्ने स्रोतमां 'प्रारब्ध वधे के पुरुषार्थ'नी कथा मळे छे. विशेष लाक्षणिक उदाहरण शामळनी 'उद्यमकर्मसंवाद' छे. अेमां अेक पात्र कहे छे प्रारब्ध ज मुख्य छे, प्रतिपक्ष कहे छे पुरुषार्थ. अे बन्ने प्रारब्ध अने पुरुषार्थने पुष्ट करतां दृष्टान्तो आपे छे. आम, केवळ वाद, वात, मान्यतानी अभिव्यक्ति नहीं, परन्तु तेने पुष्ट करती दृष्टान्तकथा ने अेनी शृङ्खला अहीं रचाय छे. 'चित्रकारदुहिता'मां के वेताळ-पचीशी'मां जे प्रश्नगर्भकथाओ अेक भूमिकाकथाने आधारे संकळाती जाय ने कथानक विकसतुं जाय, अेवी भात-पेटर्न-छे. अहीं दलील छे, अेने पुष्ट करतां नानां नानां कथानको वार्तानुं कथानक घडे छे. आम आ प्रकार प्रवह्लिकानो पेटा संलग्न अेकम निदर्शन-कथानो छे.

'मन्थल्लिका' कथा प्रकार हास्य-मजाकनो छे. अेमां उपहास पाछळ तिरस्कार, ऊतारी पाडवानी भावना पण होय; तो क्वचित अमुक जाति-वर्गनी खासियतने निमित्त बनावीने हसाववानो पण होय. आवी कथामां पुरोहित, अमात्य, तापस वगेरे स्थानथी उच्च वर्गनां गणातां पात्रोनो उपहास करवानो होय. प्रेतमहाराष्ट्र भाषामां अेटले के पैशाचीमां लखायेली क्षुद्रकथा, गोरोचना, अनङ्गवती वगेरेने दृष्टान्तरूपे हेमचन्द्राचार्य दर्शावे छे. तेमां प्रथम बे प्रकाशमां आवी जणाती नथी. भरटकबत्रीशी अने विनोदकथानां कथानकोने आ प्रकारमां मूकी शकाय. वैदिक, बौद्ध अने जैन अे त्रणे भारतीय आर्यधर्मनी जुदी पडती शाखाओनां साहित्यमां सामा पक्षने उद्देशीने आवी कथाओ कहेवाती थयेली.

'मणिकुल्या'नुं लक्षण हस्तामलकवत् करतुं हेमचन्द्रीय सूत्र छे : **'यस्यां पूर्ववस्तु न लक्ष्यते पश्चात् तु प्रकाश्यते'** अेटले के अेमां पूर्वे जे घटना घटी गइ होय तेनुं कोई ज वीगत साथे वर्णन-निरूपण थतुं नथी, परन्तु ते पछी कोई चतुराईथी अनुमान-सम्भावनादिना आधारे अे घटना केवी रीते घटी हशे, तेना पर प्रकाश पाडे छे. हेमचन्द्राचार्य अेना दृष्टान्त तरीके 'मत्स्यहसिता' दर्शावे छे. सम्भवतः माछलीना हास्य पाछळना रहस्य विशेनी

कथानो अहीं निर्देश थयो जणाय छे. भाणामां पिरसायेली मृत माछलानी वानगीनो राणीअे 'परपुरुषनो तो हुं स्पर्श पण करती नथी' अेवां कारणे अस्वीकार करतां मरेली माछली हसी पडी ! राजाने थयुं माछली कंइ हसे ? ते पण मरेली ? आनुं कारण शुं ? आम अहीं मात्र परिणाम छे, तेवुं बनवानुं कारण नथी. अेना पर प्रकाश मन्त्री पाडे छे. राजाअे आग्रहपूर्वक मन्त्रीने हास्यनुं कारण पूछतां अन्ते मन्त्रीने कहेवुं पड्युं के जे राणी परपुरुषोने भोगववा स्त्रीना वेशमां पोताना यारने रणवासमां सतत साथे राखे छे, ते मरेला माछलाने पण स्पर्श नथी करती अेवुं कहे छे तेथी मरेलो माछलो हस्यो ! आ कथा 'कथासरित्सागर' तथा अन्यत्र जाणीती छे.

'मणिकुल्या'नो अर्थ छे कुलडीमां छुपावेलो मणि. साचा मणिने माटीना पात्रमां गमे तेटलो ढांकीढूंबीछुपावीने राखो तो पण सामान्य अेवां छिद्र के सूक्ष्म अेवी तिराडमांथी पण रत्ननुं किरण बहार तो आवे ज अने अेने आधारे चतुर व्यक्ति कुलडीमां मणि छुपाव्यो छे, ते जाणी ज जाय. अर्थात् कोई पण व्यक्ति गमे तेटलो छानोछूपो गुनो करे, परन्तु अे गुनानुं परिणाम जोइने, सूक्ष्म निरीक्षण अने तर्कने आधारे चतुर व्यक्ति अे घटना केवी रीते बनी हशे, ते उकेली शके. आधुनिक डिटेक्टीव कथा अेनुं उदाहरण छे. चोरी के खून थयां होय त्यारे अे कोणे कर्युं, क्यारे कर्युं, अे 'पूर्ववस्तु न लक्ष्यते' परन्तु चतुर डिटेक्टीव जे कंइ बन्युं छे तेनुं निरीक्षण करीने ते कार्य कोणे कर्युं, केवी रीते कर्युं, ते पकडी पाडे – 'पश्चात् तु प्रकाश्यते'. आवी कथानुं उत्तम दृष्टान्त 'वसुदेव-हिण्डी'मां आवती चारुदत्तनी कथामां छे. नदीकिनारे फरवा गयेला चारुदत्त अने तेनां मित्रो भीनी रेतीमां पडेलां मोटां पगलां जुअे छे, ने थोडे जतां पदचिह्न जणातां नथी. परन्तु आगळ जतां कोइ वृक्ष नीचे ए ज पगलां जुअे छे, वृक्षनी सपुष्प डाळ तूटेली छे, अेक नानी अने बीजी मोटी अेम बे व्यक्ति छे ते स्पष्ट थाय छे. आम पूर्वे जे कंइ बनी गयुं छे ते जाणमां नथी. परन्तु पदचिह्नो अने बीजां निरीक्षणोने आधारे कोई आकाशचारी नदीमां स्नान करती सुन्दरीने पोताना खभा पर बेसाडी लई गयो छे, ते जाणमां आवे छे.

धर्म, अर्थ, काम के मोक्ष जेवा पुरुषार्थने सिद्ध करवा माटे वैचित्र्ययुक्त

वृत्तान्तनुं वर्णन होय तेने **परिकथा** कही शूद्रककथा दृष्टान्तरूपे दर्शावी छे. आमां प्रेम, साहस, शौर्यनी अनेक कथाओनो समावेश थाय छे. नरवाहनदत्त, वसुदेव, धम्मिल, अगडदत्त वगेरेनी कथाओनो आ प्रकारमां समावेश थई शके. वीरगाथा, साहसशौर्यगाथा, प्रेमकथा वगेरे आ प्रकारमां आवे. 'फोकटेईल' माटे विश्वमान्य एवा स्टिथ थोम्प्सने पण लोककथाना प्रकारमां मिथ, लिजन्ड अने फॅरीटेईल मुख्य गणाव्या छे.

मध्यम अने मोटा कदनी कथाओनुं विभागीकरण के वर्गीकरण खण्डकथा, सकलकथा, उपकथा अने बृहत्कथामां थाय छे. आमां खण्ड अने उप तथा सकल अने बृहत् बहु नजीकना प्रकारो छे. एमना वच्चेनी भेद-रेखा अत्यन्त सूक्ष्म के आछी-पातळी छे. परन्तु हेमचन्द्राचार्य आ भेद सचोट रीते, लाघवथी स्पष्ट करी आपे छे. जे कथामां पूर्वप्रचलित अने प्रसिद्ध एवा कथानकना आदि, मध्य के अन्तना कोई अंशने ज रजू करवामां आवे ते **खण्डकथा** कहेवाय. एनुं दृष्टान्त इन्दुमतीनी कथा. परन्तु विविध कथानकोने सांकळीने सम्पूर्ण कथानक सिद्ध थाय ते **सकलकथा**. एनुं दृष्टान्त समरादित्यकथा. कोई प्रसिद्ध कथाना कोई एक पात्रने केन्द्रमां राखी कथानुं स्वतन्त्ररूपमां आलेखन थाय ते **उपकथा**. एनुं दृष्टान्त चित्रलेखा. अने कोई मोटी कथाने विविध लम्भकमां विभक्त करी एमां मुख्य पात्रनी अनेक घटनाओ साथे अन्य व्यक्तिओनी घटनाओ पण सांकळी लेवामां आवे ते **बृहत्कथा**. आनुं दृष्टान्त नरवाहनदत्तनी कथा.

'कथा' सन्दर्भे हेमचन्द्राचार्यना 'काव्यानुशासनम्'ना आठमा अध्यायनी सामग्रीनुं अहीं केटलीक वीगत साथे दर्शन कर्युं, चर्चा करी, एथी स्पष्ट थशे ज के गुजराती मध्यकालीन साहित्यना तेमज एनां ज केटलाक अंगो-अंशो कण्ठ परम्पराना साहित्यमां पण ऊतरी आज सुधी जळवायां तेनां दशमी-अगीआरमी सदीनां मूळने पण वस्तुनिष्ठ लिखित दस्तावेजी रूपनी सामग्री छे. गुजरातनी साहित्य, संगीत, नृत्य, नाटक जेवी कोइ पण कलासंस्कृतिनां उद्भव-विकासने जाणवा माटे आ स्रोत ज प्रमाणभूत कही शकाय. गुजरातनी कला-संस्कृतिनां मूळ तो प्राचीनतम छे ज. १८ थी २२ लाख वर्ष पूर्वे पण गुजरात प्रदेशमां मानववसवाट हतो एना पुरातत्त्वीय पुरावा मळ्या छे. एटली

जूनी निग्रोइट जातिनी अश्मीभूत मानव खोपडी मळी छे. पछीना तबक्कानी केटलीक विगतो वेद, पुराण अने जैन स्रोतना प्राकृत भाषाना ग्रन्थोने आधारे तारवी शकीअे छीअे. परन्तु अेमां अनुमान, निगमननो आधार अनिवार्य होवाथी कोई चोक्कस वीगतने 'तथ्य'ना रूपमां तारववुं प्रमाणमां मुश्केल छे. परन्तु ऐतिहासिक युगमां प्रवेशीअे छीअे, खास तो ओछामां ओछुं गुजरातीनुं भाषा-बोली तरीकेनुं मूळ बंधातुं आव्युं अे नवमी सदीना उत्तरार्धथी तो गुजरातनी कला-संस्कृतिने जाणवानुं शक्य छे. आठथी दश सुधीनो गाळो ज अेवो छे के ते समयमां मूळ आर्य जातिनी ज होय अेवी तथा आर्येतर जातिओनी होय अेवी अनेक टोळीओ गुजरातमां आवी, स्थायी वसवाट करवा लागी. नवी बोली 'गुजराती' अेमांथी जन्मी. अे साथे ज ते ते जातिओना स्थायी वसवाट साथे ज गुजरातीतानुं अेक विशिष्ट रूप, अेनी संस्कृति बंधायां. आ गाळो ते गुजरातनी संस्कृतिना पारणानो ! अे जाणवानुं ज प्राचीनतम श्रद्धेय लिखित दस्तावेजी प्रमाण ते हेमचन्द्राचार्यना सिद्धहेमशब्दानुशासन, काव्यानुशासन, छन्दोनुशासन, त्रिषष्टिशलाकापुरुष अने तेवा अन्य ग्रन्थो, टीकाओ वगेरे. गुजरात माटे आ महत्त्वना छे अेनुं कारण अे छे के हेमचन्द्राचार्य पासे जेम भारतीय आर्य परम्पराना साहित्यना ज्ञान-परिशीलननो पायो छे, ते साथे ज, आ कलिकालसर्वज्ञ साधु-आचार्य पासे गुजरातनी ज पोतीकी परम्परानी प्रत्यक्षरूपनी पूर्ण तटस्थ छतां लगावपूर्ण जाणकारी छे. त्रिषष्टिशलाकापुरुषोना चरितालेखनने दृष्टिमां राखतां ज स्पष्ट थशे के जे अन्यमां नथी ते गुजरातीता, अेनी संस्कार-परम्परा हेमचन्द्राचार्यमां छे. अन्य बधा ज स्रोतो, अेना ग्रन्थो, साहित्यरूपे, धर्मग्रन्थरूपे मूल्यवान छे अेमां शङ्काने कारण नथी ज, परन्तु त्यां सामग्री केन्द्रमां छे ते तळ गुजरातनी नथी, अन्य क्षेत्रोनी छे, ज्यारे अहीं छे ते पूरी गुजराती परम्परा छे. लग्नने अेना विधि-पेटाविधि बधे ज भारतभरमां समान छे ज, तेम छतां गुजराती-लग्नमां पस भरवो, पीठी चोळवी, वरघोडो काढवो, jाननुं प्रस्थान, लग्ननी चोरी वगेरे आजे छे तेनुं ज दस्तावेजीकरण हेमचन्द्राचार्य-निरूपित प्रसङ्गमां छे. विधि ज नहीं, आनन्दोत्सवनां नृत्य, गोर-अणवरनी मजाकनां फटाणां, अेवां गीतोनी सामग्री- Content - अे बधुं ज अेमां दस्तावेजी रूपमां छे. धबकतुं छे. आजनी परम्परानुं प्रवर्तन त्यां छे. गुजरातनी मूळ संस्कृतिनुं आ रूप ते दशमी-अगीआरमी-बारमी सदीनुं. अे

पछी गुजरातीतामां ने भारतीयतामां अरब्बी-पर्शियन भळे छे. सल्तनतकाळ, मुगलकाळ, मराठाकाळमां अेमां घणुं बधुं नवुं आवे छे, जूनुं लुप्त थाय छे. उत्तरार्धना त्रीजा सांस्कृतिक काळमां पोर्टूगीझ, अंग्रेजी वगेरे प्रभाव पडता जाय छे. भाषा/बोलीमां ज नहीं, साहित्यमां, अन्य कलाओमां, परम्परा अने जीवन-अभिगम अने दृष्टिमां परिवर्तन आवे छे. केटलुंक अनिच्छनीय पण प्रवेशे छे - जे नथी आपणी भारतीयताने के नथी गुजरातीताने संगत ! आ सांस्कृतिक सन्दर्भे पण नवा गुजरातीयुगना प्रभावक, अरुणगुजरातना भारतीयस्तरना प्रथम पण्डित हेमचन्द्राचार्य अने अेमनुं साहित्य. गुजरातनी संस्कृतिनुं मुख्य प्रवेशद्वार हेमचन्द्रीय साहित्य छे.

१, पद्मावती बंग्लोझ,
भाविनस्कूल-महालक्ष्मीधाम सामे,
थलतेज, अमदावाद-३८००५९
दूरभाष : ०७९-२६८५३६२४